REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन एवं आकांक्षा स्तर पर पड़नें वाले प्रभाव का अध्ययन।

राहुल कुमार तिवारी[1] , डॉ. पार्वती यादव[2]
[1]शोधार्थी , पीएच. डी. शोधार्थी (शिक्षा–शास्त्र) ,
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]शोध निर्देशिका , असिस्टेण्ट प्रोफेसर (शिक्षा–विभाग) ,
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश–

विद्यालय एक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रणाली है और इस प्रणाली में व्यक्ति (शिक्षक व प्रधानाध्यापक) परस्पर व्यवहार करते है। इनके व्यवहार के अनुरूप विद्यालयी संगठन में अनेक प्रकार के पर्यावरणों का जन्म होता है। इस पर्यारण का प्रभाव विद्यालय की विशेषता के अनुरूप विद्यालय की गुणवत्ता, उसकी उपलब्धियों, शैक्षिक व सह शैक्षिक कार्यकलापों, शिक्षकों के उद्देश्यों और शिक्षकों के मनोबल आदि पर पड़ता है। प्रस्तुतशोध में 50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी विद्यालयों के 300–300 छात्रों को लिया गया है। इसमें K.S.Mishra- School Environment Inventory (SEI-M). A.K.P Sinha and R.P. Singh - Adjustment inventory for school Students (Age group 14-18 years). V.P. Sharma and A. Gupta – Educational Aspiration Scale. के शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष स्वरुप यह पाया गया कि शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शब्द कुन्ज – शालेय वातावरण, समयोजन, सामंजस्य, आकांक्षा स्तर आदि।

प्रस्तावना –

शिक्षा के क्षेत्र में भारत विश्व में सिरमौर रहा है। यद्यपि विश्व ने अनेक प्राचीन सभ्यताओं को जन्म दिया है किन्तु उनमें सर्वाधिक प्राचीन एवं आज तक अक्षुण सभ्यता भारतीय सभ्यता ही है। शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा के बिना मनुष्य के एक कुशल सामाजिक प्राणी होने की बात स्वीकार करना अनुचित होगा। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में सोचने, समझने एंव कुछ करने की क्षमता उत्पन्न होती है। समाज और अपने चारो ओर फैले अद्भुत वातावरण से मानव सदैव कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। शिक्षा का औपचारिक साधन विद्यालय है।

शिक्षा के क्षेत्र में 1954 में संयुक्त राज्य अमेरिका में **हॉल्पिन एंव क्रॉफ्ट** ने विद्यालयी वातावरण एवं उसके प्रभाव जानने के लिए अनुसंधान किया, यद्यपि इससे पूर्व औद्योगिक संगठनों में कार्यकारी दशाओं पर पड़ने वाले प्रभाव तथा संबंधित कारकों पर विचार किया जाने लगा था। इस अनुसंधान से प्रभावित होकर धीरे–धीरे संगठन पर पर्यारण का प्रभाव जानने संबंधी अनुसंधानों में तीव्र गति से वृद्धि हुई। इन सब अनुसंधानों का उद्देश्य मुख्यतः उद्योगो के कार्यकारी पर्यारण में सुधार करके मानवीय संबंधों को सुधारना था। उद्योगों से प्रभावित होकर विद्यालयों में भी प्रभावी पर्यावरण निर्माण के लिए अनुसंधान किए जाने लगे और वर्ष 1963 के

बाद अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, भारत, थाइलैण्ड आदि अनेक देशों में इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य हुए। इसी क्रम में शोधार्थी के द्वारा भी शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का औचित्य –

अपने घर के अतिरिक्त विद्यालय ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ बालक सबसे अधिक समय व्यतीत करता है। विद्यालय में ही बालक अपने ज्ञान तथा कौशल का विकास करता है। अतएव शालेय अर्थात विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों के अधिगम पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। विद्यालय प्रांगण में वे सभी आवश्यक संसाधन निहित होने चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अनुकूल वातावरण पठन–पाठन के लिए मिल सके। अनुकूल वातावरण मिलने पर ही विद्यार्थी अपने आप को उस विद्यालय के दिशा–निर्देशों के अनुकूल ढाल पाता है तथा अपने अधिगम को उच्च कोटि तक ले जाने में समर्थ हो पाता है। विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित शोध के अध्ययनों से भी यह संकेत मिलता है कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों को प्रभावित करता है।

अतः शालेय वातावरण जिससे विद्यार्थियों का सीधा सम्बन्ध होता है, शोधार्थी के रूचि का विषय है। इसीलिए मैंने अपने शोध के विषय के रूप में शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन को लिया गया है।

समस्या कथन–

शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन एवं आकांक्षा स्तर पर पड़नें वाले प्रभाव का अध्ययन।

प्रयुक्त पदों की संकियात्मक परिभाषा–

शालेय वातावरण– संस्थागत वातावरण शब्द का तात्पर्य पर्यावरण संबंधी चरों और एक समुह अथवा समुहों के वैयक्तिक चरों के बीच अंत क्रिया से है जो एक संस्था में कार्य संचालन करते है।

समायोजन– समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है। इससे प्राणी या तो वातावरण के अनुकूल स्वयं को बनाता है अथवा वातावरण को अपने अनुकूल बना लेता है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. विद्यार्थियों के शालेय वातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के शालेय वातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

Ho1: विद्यार्थियों के शालेयवातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के समायोजन पर सार्थक प्रभाव नही पाया जायेगा।

Ho2: विद्यार्थियों के शालेय वातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव नही पाया जायेगा।

अध्ययन का परिसीमन–

यह शोध केवल उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ जिले तक सीमित है। लखनऊ जिले के अंतर्गत 09 ब्लॉक को लिया गया है। यह शोध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों तक सीमित है। विद्यार्थियों की संख्या 600 परिसीमित है, जिसमें से 300 छात्र तथा

300 छात्राओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध विद्यालयी वातावरण, आकांक्षा स्तर एवं समायोजन चरों तक सीमित है।

शोध विधि–

समस्या की प्रकृति के आधार पर प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध में उ.प्र. के लखनऊ जिले के समस्त सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 10वीं में अध्ययनरत् समस्त छात्र–छात्राओं को जनसंख्या के रुप में लिया गया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु लखनऊ जिले के 50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी विद्यालयों के10वीं में अध्ययनरत 300–300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। आकड़ो का संकलन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

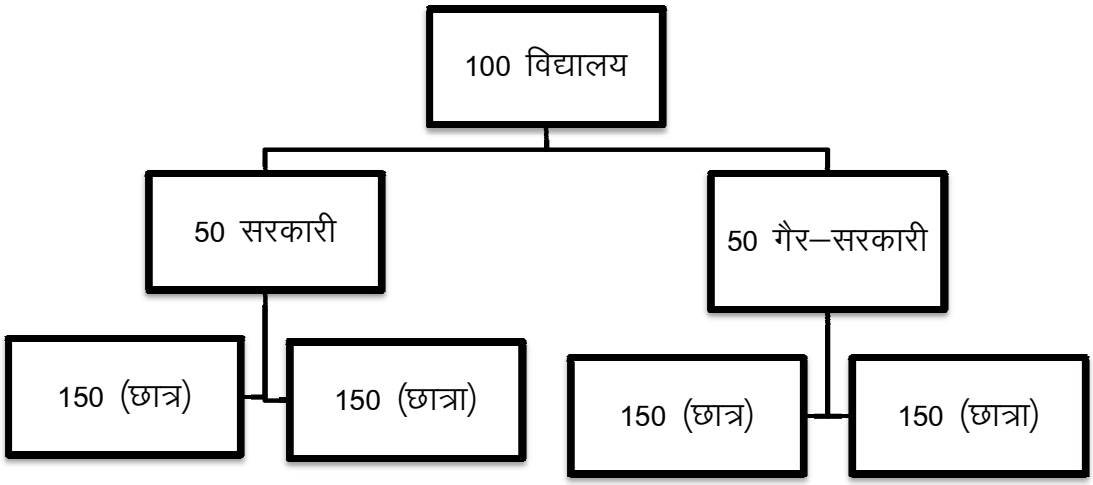

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा तीन उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. K.S.Mishra- School Environment Inventory (SEI-M) Hindi/English
2. A.K.P Sinha and R.P. Singh - Adjustment inventory for school Students Hindi/English (Age group 14-18 years)

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि –

वन–वे एनोवा (One-way ANOVA)

परिकल्पनाओं का विश्लेषण :–

Ho1– विद्यार्थियों के शालेय वातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के समायोजन पर सार्थक प्रभाव नही पाया जायेगा।

Summary of ANOVA

Sources of Variation	df	SS	MS	F	Significance
Between	(k-1) 3-1=2	8581.07	4290.53	68.45	Sig.
Within	(N-K) 600-3 = 597	37423.89	62.68		

df=2/597
0.05= 4.65
0.01= 3.01

व्याख्या–

उपरोक्त साारणी क्रमांक से स्पष्ट होता है, विभिन्न समूहों के मध्य सार्थक अंतर तथा अंतः क्रियात्मक प्रभाव ज्ञात करने हेतु f की गणना की गयी है f की गणना के द्वारा प्राप्त मान 68.45 है परंतु 2/597 df के लिए f का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 4.65 है तथा 0.05 स्तर पर 3.01 है जो कि f के प्राप्त मान से कम है अर्थात विभिन्न समूहों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है। इस संदर्भ में यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष– विद्यार्थियों के शालेय वातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के समायोजन पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

Ho2–विद्यार्थियों के शालेय वातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव नही पाया जायेगा।

Summary of ANOVA

Sources of Variation	Df	SS	MS	F	Significance
Between	(k-1) 3-1=2	8929.82	4464.91	62.65	Sig.
Within	(N-K) 600-3 = 597	42189.28	71.72		

df=2/597
0.05= 4.65
0.01= 3.01

व्याख्या–

उपरोक्त साारणी क्रमांक से स्पष्ट होता है, विभिन्न समूहों के मध्य सार्थक अंतर तथा अंतः क्रियात्मक प्रभाव ज्ञात करने हेतु f की गणना की गयी है f की गणना के द्वारा प्राप्त मान 62.65 है परंतु 2/597df के लिए f का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 4.65 है तथा 0.05 स्तर पर 3.01 है जो कि f के प्राप्त मान से कम है अर्थात विभिन्न समूहों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है। इस संदर्भ में यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष– विद्यार्थियों के शालेय वातावरण (उच्च, सामान्य, निम्न) के मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

उपसंहार –

प्रस्तुत शोध में परिणाम स्वरुप यह पाया गया कि विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनके समायोजन पर सार्थक प्रभाव पड़ता हैं। अर्थात् जहाँ पर विद्यालय का वातावरण अच्छा होता है वहाँ पर सरलता से समायोजित हो जाते है और उनकी समायोजन क्षमता उच्च स्तर की होती है। विद्यालय बालक का दूसरा घर होता है। अपने घर के बाद विद्यालय ही ऐसा स्थान है जहां विद्यार्थी सबसे अधिक समय व्यतीत करता है। अतएव विद्यालय के वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। एक विद्यार्थी जब विद्यालय में प्रवेश करता है तो उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती उस वातावरण में समायोजन की होती है। जब एक विद्यालय का वातावरण अच्छा होता है तब बालक आसानी से विद्यालय में समायोजित हो जाता है और बालक का आत्म विश्वास बढ़ता है। शालेय का वातावरण जितना अधिक प्रभावशाली व विद्यार्थियों के अनुकूल होगा, उनका विद्यालय में समायोजन उतना अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से होगा। विद्यालयी वातावरण सुगम होने की दशा में विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर अत्यन्त प्रभावशील होगा।

विद्यार्थियों के समायोजन एवं उनके आकांक्षा स्तर को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक विद्यालय का वातावरण होता है अतः शोध कार्य द्वारा विद्यालय के वातावरण को अधिक से अधिक विद्यार्थियों के अनुकूल कैसे बनाया जा सकता है, जिससे उनका अधिगम अधिक से अधिक हो सके और विद्यार्थी समाज व देश के निर्माण में सहायक सिद्ध हो। यही शोधार्थी का लक्ष्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. अग्रवाल, जे. सी. 1972, विद्यालय प्रशासन, आर्य बुक डिपो करोलबाग, नई दिल्ली।
2. अवस्थी, डॉ. दिलीप कुमार, (2010), कर्नल ईश्वरी सिंह इंटरमीडिएट कॉलेज जालौना – बच्चों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय वातावरण का प्रभाव।
3. कपिल, एच. के. (2006), अनुसंधान विधियाँ, एच. पी. भार्गव बुक हाउस आगरा।
4. कपिल, एच. के. (1975), सांख्यिकीय के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
5. गुप्ता, प्रो0 एस0 पी0 एवं गुप्ता, डा0 अलका 2015, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. जैन, किशनचन्द्र, 1976, शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
7. पचौरी, डॉ. गिरीश, (2014), शिक्षा का सामाजिक आधार, लापल ए बुक डिपो मेरठ,
8. पाठक, पी0डी0 2006, शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. प्रतिभा, एम फिल (शिक्षा शास्त्र), (2014), डॉ. सी. वी. रामन वि. वि. बिलासपुर किशोरवस्था के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
10. भाई योगेन्द्रजीत, 1977, शैक्षिक और विद्यालय प्रशासन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
11. मनोज, एम. फिल (शिक्षाशास्त्र), (2014), डॉ. सी. वी. रामन वि. वि. वि. बिलासपुर सरगुजा संभाग के माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षको के उपर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान का प्रभाव।
12. सरीन, शशिकला, सरीन, अंजनी (2018–14) शैक्षिक अनुसंधान विधियां, अग्रवाल पब्लिकेशन।
13. सारस्वत, डा0 मालती 2010, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद। सुखिया एस.पी 2006 विद्यालय प्रशासन संगठन एवं विनेदा पुस्तक आगरा।
14. सिंह, अरूण कुमार 2008, शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
15. शर्मा, आर. ए. 2002 शिक्षा प्रबन्धन–सूर्या पब्लिकेशन मेरठ ।
16. शर्मा, डॉ. आर. ए. (1985–86), शिक्षा अनुसंधान, लाल बुक डिपो, मेरठ,